रचनात्मक आकलन
कक्षा 10
विषय–संस्कृत

रचनात्मक आकलन परिचय, उद्देश्य एवं आवश्यकता– रचनात्मक आकलन कक्षा शिक्षण के साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है, जो सीखने के साथ ही की जाती है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों के सीखने के स्तर एवं पढ़ाई जाने वाले पाठ्य–वस्तु की समझ का आकलन शिक्षण के दौरान ही किया जा सके तथा इसके आधार पर शिक्षक अपनी पाठ–योजना में आवश्यक परिवर्तन कर सके और कमजोर विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त उपचारात्मक शिक्षण की योजना बना सकें।

रचनात्मक आकलन के टूल्स एवं टेक्नीक्स– पढ़ाई जाने वाली पाठ्य–वस्तु को विद्यार्थियों ने ठीक से समझा या नहीं? यह ज्ञात करने के लिए शिक्षकों द्वारा विभिन्न उपायों का प्रयोग किया जाता है, जैसे – प्रश्न पूछना, कुछ लिखित कार्य करवाना, उनसे कुछ बनवाना, कुछ गतिविधि करवाना इत्यादि। इन्हें ही रचनात्मक आकलन के टूल्स एवं टेक्नीक्स (उपकरण एवं तकनीक) कहा जाता है। कुछ सामान्य टूल्स एवं टेक्नीक्स इस प्रकार हैं– प्रश्नावली, वाद विवाद/ समूह–चर्चा, मॉडल/चार्ट बनवाना, दृश्यात्मक प्रस्तुति, वाचन, कहानी/कविताएं/ लेख इत्यादि लिखवाना, MCQs, रोल–प्ले।

1–संस्कृत विषय में विषयगत दक्षताओं के लिए निम्न बिन्दुओं पर बल दिया जाए–

क. संस्कृत–वाचन एवं संभाषण कौशल का विकास

ख. श्रवण–कौशल का विकास

ग. पठन–कौशल का विकास

घ. लेखन–कौशल का विकास

2–रचनात्मक आकलन हेतु उपर्युक्त दक्षताओं के विकास के लिए निम्न गतिविधियों पर बल दिया जाए–

क. संस्कृत संभाषण–कौशल के विकास के लिए रुचिकर भाषा एवं अभ्यास–विधि का प्रयोग, कथा–श्रवण, वाद–विवाद, संवाद, वर्णनपरक प्रतियोगिताओं का आयोजन।

ख. श्रवण–कौशल के विकास के लिए गुरुमुख, आकाशवाणी, दूरवाणी (टेलीफोन), दूरदर्शन, ध्वनि मुद्रणयन्त्र (टेपरिकार्डर) आदि का प्रयोग।

ग. अर्धग्रहण पूर्वक अनुकरण पाठ एवं सस्वर वाचन।

3–<u>उपर्युक्त गतिविधियों को पूरे सत्र में कक्षा शिक्षण के साथ निम्न प्रकार से जोड़ा जाए–</u>

क. कक्षा शिक्षण के साथ वाद–विवाद, प्रहसन, भाषण सस्वर वाचन, निबन्ध–लेखन एवं यथावसर गृहकार्य प्रदान करना।

ख. तत्काल निर्धारित विषम पर वाक्य–रचना, श्रवण कराना, छात्रों के आशुभाषण, संवाद आयोजित कराना तथा शिक्षक द्वारा स्वयं कहानी सुनाकर उससे सम्बद्ध (सम्बन्धित), प्रश्न पूछना –

4–<u>रचनात्मक आकलन का रिकार्ड–</u> रिकार्ड रखने से शिक्षक को विद्यार्थियों के सबल एवं निर्बल पक्ष की जानकारी रहती है, जिसके आधार पर वह अपनी शिक्षण–योजना में आवश्यक परिवर्तन कर सकता है अथवा उपचारात्मक शिक्षण की योजना बना सकता है।

रेटिंग स्केल का निर्धारण करते हुए उच्चारण की शुद्धता, श्लोक आदि का आरोह–अवरोह , लेखन शुद्धता आदि के द्वारा मापन कर छात्रों की प्रस्तुति के आधार पर अभिलेखों को दैनन्दिनी में संकलित कर सुरक्षित रखा जाय।

नोट–उक्त गतिविधियाँ उदाहरण स्वरूप हैं। शिक्षक इसके अतिरिक्त अन्य नवाचार अपना सकते हैं।

दिनांक–

गतिविधि का नाम–वाक्य संरचना

उद्देश्य– अनुभूति एवं अभिव्यक्ति कौशल

प्रकरण– निबन्ध

क्रमांक	विद्यार्थी का नाम	प्राप्तांक	ग्रेड	टिप्पणी
1	विद्यार्थी –1	10	A1	निबन्ध तत्व के अनुरूप एवं व्याकरणिक रूप से पूर्णतया शुद्ध
2	विद्यार्थी–2	8	B1	विषय वस्तु में शिथिलता
3	विद्यार्थी–3	8 1/2	A2	आंशिक रूप से व्याकरणिक त्रुटियां
4	विद्यार्थी–4	6	C1	संकल्पनात्मक बोध की कमी